भेड़ें स्वार्थवश झुंड बनाती हैं

भेड़ों का झुंड में चलना जग प्रसिद्ध है। मगर वे झुंड में क्यों चलती हैं? अगर कोई शिकारी पीछा करे तो हरेक भेड़ का व्यवहार क्या होता है? कई शोधकर्ताओं का ख्याल है कि ऐसे मौकों पर भेड़ों के व्यवहार की व्याख्या स्वार्थ के आधार पर की जा सकती है।

दशकों पुराने इस विचार को 'स्वार्थी झुंड सिद्धांत' कहते हैं। मगर इसे सिद्ध करने के लिए प्रमाण बहुत कम थे। पहले सील मछलियों, केंकड़ों और कबूतरों पर कुछ अध्ययन किए गए थे और संकेत मिले थे कि इन जंतुओं में झुंड बनाने की प्रवृत्ति के पीछे स्वार्थ होता है। मगर इन अध्ययनों से प्राप्त आंकड़े अस्पष्ट थे। अब एक अध्ययन भेड़ों पर किया गया है और इससे प्राप्त आंकड़े 'स्वार्थी झुंड सिद्धांत' की पुष्टि करते हैं।

लंदन विश्वविद्यालय के जीव वैज्ञानिक एंड्रयू किंग और उनके साथियों ने 46 भेड़ों की पीठ पर जीपीएस उपकरण बांध दिए। जीपीएस उपकरण की मदद से उन्हें हर क्षण पता रहता था कि कौन-सी भेड़ कहां है और कहां जा रही है। इसी तरह से उन्होंने एक शिकारी कुत्ते की पीठ पर भी एक जीपीएस उपकरण लाद दिया।

अब इस शिकारी कुत्ते को भेड़ों के समूह का पीछा करने को छोड़ दिया और 46 में से एक-एक भेड़ की स्थिति हर सेकंड रिकॉर्ड की। जब इन आंकड़ों का विश्लेषण किया गया तो पता चला कि शिकारी कुत्ते से बचने की फिराक में अलग-अलग भेड़ें कुत्ते से दूर भागने की कोशिश नहीं कर रही थीं। न ही वे अपने आगे वाली भेड़ के पीछे-पीछे चल रही थीं। दरअसल, सारी की सारी भेड़ें भागकर झुंड के बीच में पहुंचने की कोशिश कर रही थीं।

यानी भेड़ों की गति की व्याख्या सिर्फ यह देखकर की जा सकती है कि झुंड का केंद्र कहां है। इसका मतलब हुआ कि शिकारी कुत्ते से सामना होने पर वे स्वयं को बचाने के लिए अन्य भेड़ों को खतरे में डाल देती हैं। आखिर जो भेड़ झुंड के बीच में रहेगी वही सबसे सुरक्षित है और सारी भेड़ें तो केंद्र में हो ही नहीं सकतीं। यदि कुछ भेड़ें झुंड के केंद्र में पहुंच जाती हैं, तो इसका मतलब है कि उन्होंने कुछ भेड़ों को झुंड के किनारे पर धकेला होगा और किनारे की भेड़ों के पकड़े जाने की संभावना ज़्यादा है।

यह तो एक स्वार्थी व्यवहार ही कहा जाएगा कि खुद को बचाने के लिए अपनी साथी भेड़ों को झुंड के किनारों पर छोड़ दो। इस अध्ययन से उक्त सिद्धांत की पुष्टि होती है और अंदाज़ लगता है कि जैव विकास के लंबे दौर में वे कौन-से दबाव थे जिन्होंने जंतुओं को झुंड बनाकर रहने की ओर धकेला होगा। शोधकर्ताओं का विचार है कि अभी इस अध्ययन के परिणामों को सामान्य नियम कहना ठीक नहीं होगा। जैसे अभी यह नहीं कहा जा सकता कि भेड़ों का व्यवहार बाकी जंतुओं के मामले में भी लागू किया जा सकता है। इसी प्रकार से एक प्रशिक्षित शिकारी कुत्ता कुदरती खतरों का सही प्रतिनिधित्व नहीं करता है। शोधकर्ता यह भी देखना चाहते हैं कि जब झुंड में कुछ भेड़ों को कोई ऐसी बीमारी हो जाती है जो तेज़ी से पूरे झुंड में फैल सकती हैं, तब भेड़ों का व्यवहार कैसा होता है। इससे जंतुओं के झुंड में बीमारियों की निगरानी करने में मदद मिल सकती है। ***(स्रोत फीचर्स)***